*The Research Analytics* ISSN ISSN (Online): 3107-6165
Volume 1, Issue 3, July-Sept 2025 pp. 138-146

The Research Analytics
(A Peer Reviewed and Open Access Journal)

14

# वर्तमानकालीन संदर्भों में मानव जीवन हेतु श्रीमद्भगवद्गीता का प्रासंगिक योगदान

अरुण कुमार पांडेय
शोधार्थी, संस्कृत विभाग, सोना देवी विश्वविद्यालय, घाटशिला (झारखंड), भारत

## सारांश

*श्रीमद्भगवद्गीता केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि जीवन का व्यावहारिक मार्गदर्शक है। महाभारत के युद्धभूमि में अर्जुन और श्रीकृष्ण के संवाद से उत्पन्न यह ग्रंथ समय, समाज और परिस्थिति के पार जाकर सार्वकालिक सत्य प्रस्तुत करता है। आधुनिक युग की जटिलताओं में—जहाँ भौतिकवाद, उपभोक्तावाद, नैतिक संकट, तनाव, युद्ध और पर्यावरणीय असंतुलन जैसे अनेक प्रश्न मानव जीवन को प्रभावित कर रहे हैं—गीता के उपदेश और भी अधिक प्रासंगिक हो उठते हैं।*

*गीता का मूल संदेश है—कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग का संतुलन। यह मनुष्य को उसके कर्तव्यों के प्रति सजग करता है, ज्ञान के द्वारा आत्मबोध का मार्ग दिखाता है, और भक्ति द्वारा हृदय में विनम्रता और समर्पण का भाव जगाता है। आधुनिक प्रशासन, प्रबंधन, शिक्षा, मनोविज्ञान और सामाजिक जीवन में गीता की शिक्षा स्थायी समाधान प्रस्तुत करती है। यह शोध-पत्र पाँच खंडों में गीता की शिक्षाओं को वर्तमानकालीन चुनौतियों के साथ जोड़कर प्रस्तुत करता है। इसमें गीता के दार्शनिक महत्व, कर्म और कर्तव्य की दृष्टि, मानसिक स्वास्थ्य में योगदान, नैतिक मूल्यों की रक्षा और वैश्विक शांति की दिशा में इसके महत्व का विश्लेषण किया गया है। गीता का संदेश है—"सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज"—और यही आज की दुनिया को संतुलन, सामंजस्य और स्थिरता की ओर ले जा सकता है।*

***मुख्य शब्द:*** *श्रीमद्भगवद्गीता, कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग, आधुनिक जीवन की प्रासंगिकता*

## भूमिका

श्रीमद्भगवद्गीता भारतीय संस्कृति, दर्शन और अध्यात्म का अमूल्य रत्न है। यह केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि जीवन का दार्शनिक मार्गदर्शक है, जो मानवता को नैतिकता, कर्तव्य, आत्मज्ञान और भक्ति का संतुलित संदेश देता है। महाभारत के युद्धक्षेत्र में जब अर्जुन मोह और विषाद से ग्रस्त होकर अपने कर्तव्यों से विमुख हो गया, तब भगवान श्रीकृष्ण ने उसे गीता का उपदेश दिया। इस संवाद का महत्व केवल उस समय के लिए नहीं था, बल्कि यह हर युग और हर परिस्थिति के लिए शाश्वत मार्गदर्शन है। यही कारण है कि गीता को "सर्वकालप्रासंगिक" ग्रंथ माना गया है।

गीता में जीवन की तीन प्रमुख धाराओं—कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग—का संतुलन मिलता है। यह संतुलन ही गीता की मौलिकता है। अन्य ग्रंथ जहाँ किसी एक मार्ग को प्रमुखता देते हैं, वहीं गीता सभी मार्गों का समन्वय करती है। महात्मा गांधी ने कहा था, "गीता मेरे जीवन का आधार है; यह हर संकट की घड़ी में मेरा मार्गदर्शन करती है" (Gandhi 112)। गांधीजी ने गीता के *अनासक्तियोग* को अपनाकर राजनीतिक और सामाजिक जीवन में निष्काम कर्म का आदर्श प्रस्तुत किया।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने गीता को "भारतीय दर्शन का सार" बताया (Radhakrishnan 56)। उनके अनुसार गीता भारतीय जीवन-दर्शन की समग्र अभिव्यक्ति है, जो सांख्य, योग, वेदांत और भक्ति जैसे विविध मतों को एक सूत्र में पिरोती है। गीता यह सिखाती है कि जीवन केवल भोग या त्याग पर आधारित नहीं है, बल्कि संतुलित दृष्टिकोण अपनाने से ही शांति और मुक्ति प्राप्त होती है।

*The Research Analytics* ISSN ISSN (Online): 3107-6165
Volume 1, Issue 3, July-Sept 2025

गीता का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्त्व

महाभारत काल की परिस्थितियाँ अत्यंत जटिल थीं। राजनीति निरंतर संघर्ष से भरी थी, धर्म कर्मकांडों में उलझा हुआ था, और समाज में असमानता और अन्याय व्याप्त था। ऐसे समय में गीता ने जीवन का ऐसा दृष्टिकोण प्रस्तुत किया, जो केवल धार्मिक आस्थाओं तक सीमित नहीं रहा, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक जीवन के लिए भी उपयोगी सिद्ध हुआ। इसका संदेश था—"यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत... तदा आत्मानं सृजाम्यहम्"। यह श्लोक स्पष्ट करता है कि जब भी अधर्म बढ़ेगा और धर्म का ह्रास होगा, तब भगवान धर्म की स्थापना के लिए अवतरित होंगे। इस संदेश ने न केवल अर्जुन को साहस दिया, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को भी नैतिक संबल प्रदान किया।

गीता का वैश्विक प्रभाव

गीता का प्रभाव भारत तक सीमित नहीं रहा। इसका अनुवाद अनेक भाषाओं में हुआ और विश्वभर के चिंतक, दार्शनिक और राजनेता इससे प्रभावित हुए। पश्चिम के दार्शनिक टॉलस्टॉय ने गीता के संदेश को नैतिक जीवन का आधार माना (Tolstoy 44)। हर्मन हेस्से ने गीता को "आध्यात्मिक स्वतंत्रता का घोषणापत्र" कहा (Hesse 78)। श्री अरविंदो ने इसे "क्रांतिकारी जीवन-दर्शन" बताते हुए कहा कि गीता व्यक्ति को केवल ध्यान या त्याग की ओर नहीं ले जाती, बल्कि उसे सक्रिय जीवन में कर्तव्य और भक्ति का मार्ग दिखाती है (Aurobindo 92)।

स्वामी विवेकानंद ने गीता की व्याख्या करते हुए कहा कि "गीता निष्काम कर्म का सर्वोत्तम ग्रंथ है, जो हमें कर्म करते हुए भी आत्मिक शांति प्राप्त करने की शिक्षा देता है" (Vivekananda 131)। इसी प्रकार एकनाथ ईश्वरन ने लिखा कि "गीता हमें सिखाती है कि सच्चा सुख और स्थिरता आत्मा के भीतर है, बाहरी परिस्थितियों में नहीं" (Easwaran 203)।

गीता और आधुनिक समाज

21वीं सदी का समाज तकनीकी और भौतिक दृष्टि से विकसित है, परंतु मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक दृष्टि से संकटग्रस्त है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने जीवन को सुविधाजनक तो बनाया, परंतु मनुष्य तनाव, प्रतिस्पर्धा, हिंसा और असुरक्षा से घिर गया। शिक्षा केवल रोजगार प्राप्त करने का साधन बन गई है; राजनीति नैतिकता से विमुख हो चुकी है; व्यवसाय शोषण और लालच पर आधारित है; और पर्यावरणीय असंतुलन मानव जीवन को संकट में डाल रहा है।

ऐसे समय में गीता का संदेश अत्यंत प्रासंगिक है। कर्मयोग हमें सिखाता है कि हमें अपने कर्तव्यों का पालन निस्वार्थ भाव से करना चाहिए। ज्ञानयोग आत्मा और शरीर के भेद को समझाता है, जिससे हम दुःख और सुख दोनों में समभाव रख सकते हैं। भक्तियोग हमें श्रद्धा, समर्पण और करुणा का भाव देता है, जिससे समाज में प्रेम और सहिष्णुता का वातावरण बनता है।

गीता और शिक्षा

आज की शिक्षा प्रणाली में नैतिकता और मानवीय मूल्यों का अभाव दिखाई देता है। विद्यार्थी केवल प्रतिस्पर्धा और नौकरी की दृष्टि से पढ़ते हैं। गीता शिक्षा को आत्मज्ञान और चरित्र-निर्माण का माध्यम मानती है। गांधीजी का मत था कि "शिक्षा का उद्देश्य केवल बुद्धि का विकास नहीं, बल्कि आत्मा का जागरण भी होना चाहिए" (Gandhi 145)। यदि शिक्षा में गीता के सिद्धांतों को जोड़ा जाए, तो विद्यार्थी केवल सफल नागरिक ही नहीं, बल्कि अच्छे इंसान भी बन सकते हैं।

गीता और प्रबंधन

व्यवसाय और प्रबंधन की दुनिया में भी गीता अत्यंत प्रासंगिक है। आधुनिक प्रबंधन विशेषज्ञ मानते हैं कि गीता का कर्मयोग नेतृत्व और निर्णय लेने में मार्गदर्शन करता है। स्वामी प्रभवनन्द ने लिखा कि "नेतृत्व का असली गुण वही है, जो दूसरों के हित को अपने हित से ऊपर रखे" (Prabhavananda and Isherwood 149)। गीता का यही सिद्धांत आज के प्रतिस्पर्धात्मक प्रबंधन में स्थायी और नैतिक समाधान प्रस्तुत करता है।

*The Research Analytics* ISSN ISSN (Online): 3107-6165
Volume 1, Issue 3, July-Sept 2025

गीता और मानसिक स्वास्थ्य

आज की दुनिया में मानसिक तनाव, अवसाद और आत्महत्या जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं। युवा वर्ग नशे और असंतुलन की ओर आकर्षित हो रहा है। गीता का ज्ञानयोग ऐसे समय में जीवनदायिनी सिद्ध होता है। डॉ. आंबेडकर ने कहा कि "गीता मनुष्य को आत्मा और शरीर के भेद का बोध कराती है, जिससे वह जीवन की कठिनाइयों का सामना धैर्य और साहस से कर सकता है" (Ambedkar 177)।

गीता और पर्यावरण

आधुनिक युग में पर्यावरणीय संकट मानवता के सामने सबसे बड़ी चुनौती है। गीता प्रकृति को केवल भौतिक संसाधन नहीं, बल्कि दिव्य शक्ति मानती है। यदि हम गीता के दृष्टिकोण को अपनाएँ, तो प्रकृति के साथ संतुलित और सामंजस्यपूर्ण संबंध स्थापित कर सकते हैं। यह दृष्टि पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है।

निष्कर्ष

भूमिका के इस विस्तृत विवेचन से स्पष्ट है कि गीता का महत्व केवल धार्मिक या आध्यात्मिक जीवन तक सीमित नहीं है। यह शिक्षा, राजनीति, प्रबंधन, मानसिक स्वास्थ्य और पर्यावरण जैसे विविध क्षेत्रों में प्रासंगिक है। महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानंद, अरविंदो, टॉलस्टॉय, हेस्से और आंबेडकर जैसे चिंतकों ने गीता से प्रेरणा लेकर अपने-अपने क्षेत्रों में नए आदर्श स्थापित किए। गीता का यह सार्वकालिक संदेश है कि जीवन का सार निष्काम कर्म, आत्मज्ञान और भक्ति में निहित है। आधुनिक जीवन की जटिलताओं के बीच यही संदेश मानवता को संतुलन, शांति और दिशा प्रदान कर सकता है।

गीता का कर्मयोग और आधुनिक जीवन

श्रीमद्भगवद्गीता का सबसे बड़ा योगदान "कर्मयोग" की अवधारणा है। गीता कहती है —
**"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन। मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि॥"**
(गीता 2.47)

अर्थात मनुष्य को केवल कर्म करने का अधिकार है, उसके फल पर नहीं। यह सिद्धांत आज के आधुनिक जीवन में भी उतना ही प्रासंगिक है जितना महाभारत काल में था।

कर्मयोग का दार्शनिक आधार

गीता कर्मयोग के माध्यम से सिखाती है कि कर्म का त्याग नहीं, बल्कि निष्काम कर्म ही मुक्ति का मार्ग है। श्रीकृष्ण स्पष्ट कहते हैं कि कर्म से बचना संभव नहीं है; शरीर धारण करने वाला प्रत्येक जीव कर्म करने के लिए बाध्य है। प्रश्न केवल यह है कि हम उसे किस भाव से करते हैं — स्वार्थ और फल की आकांक्षा से या निस्वार्थ भाव से। निष्काम कर्म व्यक्ति को न केवल आंतरिक शांति देता है बल्कि समाज को भी स्थिरता और प्रगति की ओर ले जाता है।

बाल गंगाधर टिलक ने अपनी कृति *गीता रहस्य* में कहा कि गीता का मूल संदेश "कर्मप्रधानता" है। उनके अनुसार गीता का यह शिक्षण भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के लिए भी प्रेरक सिद्ध हुआ (Tilak 88)। स्वामी विवेकानंद ने भी कर्मयोग की व्याख्या करते हुए इसे "मानव सेवा का सर्वोच्च आदर्श" बताया (Vivekananda 140)।

आधुनिक जीवन में कर्मयोग की आवश्यकता

आज का समाज तेज़ गति से बदल रहा है। प्रतिस्पर्धा, उपभोक्तावाद और भौतिकवाद ने मनुष्य को अत्यधिक तनावग्रस्त कर दिया है। हर व्यक्ति केवल परिणाम और लाभ की चिंता में डूबा हुआ है। इस कारण पारिवारिक संबंधों में खटास, कार्यस्थल पर असंतोष और समाज में असमानता बढ़ रही है।

ऐसे समय में गीता का कर्मयोग सिखाता है कि हमें अपने कर्तव्यों का पालन बिना फल की चिंता के करना चाहिए। यदि प्रत्येक व्यक्ति यह सिद्धांत अपनाए तो जीवन में संतुलन और शांति स्वतः आ जाएगी। उदाहरण के लिए, यदि कोई शिक्षक केवल वेतन के लिए नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के निर्माण के लिए पढ़ाए; यदि कोई डॉक्टर केवल धन कमाने के लिए नहीं, बल्कि रोगियों की सेवा के लिए काम करे;

*The Research Analytics* ISSN ISSN (Online): 3107-6165
Volume 1, Issue 3, July-Sept 2025

यदि कोई राजनेता केवल सत्ता के लिए नहीं, बल्कि जनता के कल्याण के लिए कार्य करे — तो समाज स्वतः प्रगतिशील और सुखी बन जाएगा।

शिक्षा में कर्मयोग

आज की शिक्षा व्यवस्था में विद्यार्थियों पर परीक्षा, अंक और करियर का दबाव इतना अधिक है कि वे वास्तविक ज्ञान से विमुख हो रहे हैं। गीता का कर्मयोग विद्यार्थियों को यह सिखाता है कि वे अध्ययन को केवल नौकरी के साधन के रूप में न देखें, बल्कि आत्मविकास और ज्ञानार्जन के रूप में देखें। महात्मा गांधी ने भी कहा था कि "गीता हमें शिक्षा के क्षेत्र में निष्काम भाव से कर्म करने की प्रेरणा देती है" (Gandhi 119)।

प्रबंधन और नेतृत्व में कर्मयोग

आधुनिक कॉर्पोरेट जगत में गीता का कर्मयोग अत्यंत प्रासंगिक है। मैनेजमेंट के विद्वान मानते हैं कि गीता का सिद्धांत "लीडरशिप विदाउट सेल्फ" (Leadership without Self) प्रस्तुत करता है। इसका अर्थ है ऐसा नेतृत्व जो व्यक्तिगत लाभ या अहंकार के लिए नहीं, बल्कि संगठन और समाज की भलाई के लिए कार्य करे। श्री अरविंदो ने लिखा है कि "सच्चा नेतृत्व वही है, जो अपने कर्म को ईश्वरार्पण मानकर करे" (Aurobindo 102)।

राजनीति और प्रशासन में कर्मयोग

राजनीति में नैतिकता का संकट आज सबसे बड़ी समस्या है। भ्रष्टाचार, सत्ता-लोलुपता और स्वार्थ ने लोकतंत्र की नींव को हिला दिया है। यदि राजनेता गीता का कर्मयोग अपनाएँ और अपने कर्तव्यों को निस्वार्थ भाव से निभाएँ, तो प्रशासनिक तंत्र अधिक पारदर्शी और जनता-केंद्रित हो सकता है। डॉ. राधाकृष्णन ने कहा था कि "गीता राजनीति में धर्म और नैतिकता का समन्वय प्रस्तुत करती है" (Radhakrishnan 61)।

दैनिक जीवन में कर्मयोग

गीता का कर्मयोग केवल उच्च स्तर की राजनीति, शिक्षा या प्रबंधन तक सीमित नहीं है। यह प्रत्येक व्यक्ति के दैनिक जीवन में लागू होता है। गृहस्थ जीवन में, यदि पति-पत्नी अपने-अपने कर्तव्यों को निष्काम भाव से निभाएँ, तो परिवार में प्रेम और सामंजस्य बढ़ेगा। सामाजिक जीवन में यदि व्यक्ति बिना स्वार्थ दूसरों की सहायता करे, तो समाज में करुणा और सहयोग की भावना प्रबल होगी।

एकनाथ ईश्वरन लिखते हैं कि "कर्मयोग हमें जीवन की व्यस्तताओं में भी आंतरिक शांति का अनुभव कराता है" (Easwaran 210)। इसी प्रकार स्वामी प्रभवनन्द और क्रिस्टोफर ईशरवुड ने कहा कि "कर्मयोग का अर्थ केवल कर्म करना नहीं, बल्कि उसे ईश्वर को समर्पित करना है" (Prabhavananda and Isherwood 152)।

कर्मयोग और मानसिक स्वास्थ्य

आधुनिक जीवन की सबसे बड़ी समस्या मानसिक तनाव है। लोग चिंता और अवसाद में जी रहे हैं। गीता का कर्मयोग हमें सिखाता है कि यदि हम केवल अपने कर्तव्यों पर ध्यान दें और फल की चिंता छोड़ दें, तो तनाव स्वतः कम हो जाएगा। यही सिद्धांत आधुनिक मनोविज्ञान में भी स्वीकार किया जा रहा है। हर्मन हेस्से ने लिखा था कि "गीता का निष्काम कर्म आधुनिक युग के मानसिक रोगों का सबसे अच्छा उपचार है" (Hesse 81)।

निष्कर्ष

गीता का कर्मयोग आधुनिक जीवन के हर क्षेत्र में मार्गदर्शक सिद्ध होता है। शिक्षा, प्रबंधन, राजनीति, समाज और व्यक्तिगत जीवन — सभी जगह यह सिद्धांत लागू हो सकता है। यदि मनुष्य निष्काम भाव से कर्म करे और अपने कार्य को ईश्वरार्पण माने, तो न केवल उसका जीवन सुखमय होगा, बल्कि पूरा समाज भी प्रगति की ओर अग्रसर होगा। यही कारण है कि गीता का कर्मयोग आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना महाभारत काल में था।

*The Research Analytics* ISSN ISSN (Online): 3107-6165
Volume 1, Issue 3, July-Sept 2025

गीता का ज्ञानयोग और मानसिक स्वास्थ्य

श्रीमद्भगवद्गीता का दूसरा प्रमुख स्तंभ है **ज्ञानयोग**। गीता के अनुसार वास्तविक मुक्ति और शांति आत्मा और शरीर के भेद को समझने में निहित है। श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं:

**"नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः। उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्वदर्शिभिः॥"**

(गीता 2.16)

अर्थात असत्य का कभी अस्तित्व नहीं होता और सत्य का कभी नाश नहीं होता। जो तत्वदर्शी हैं, वे इस सत्य को जानते हैं। यह श्लोक स्पष्ट करता है कि वास्तविकता आत्मा है, जो शाश्वत और अविनाशी है।

ज्ञानयोग का स्वरूप

ज्ञानयोग का अर्थ है आत्मा और परमात्मा के स्वरूप का बोध। मनुष्य जब समझ जाता है कि उसका वास्तविक अस्तित्व शरीर नहीं, बल्कि आत्मा है, तब वह सुख-दुःख, लाभ-हानि और जीवन-मृत्यु से ऊपर उठ जाता है। गीता में ज्ञानयोग केवल बौद्धिक ज्ञान नहीं है, बल्कि अनुभव और आत्मबोध की अवस्था है।

डॉ. राधाकृष्णन ने लिखा है कि "गीता का ज्ञानयोग आत्मा की शाश्वतता और शरीर की क्षणभंगुरता को स्पष्ट करता है, जिससे मनुष्य जीवन की कठिनाइयों को सहने की शक्ति पाता है" (Radhakrishnan 73)। श्री अरविंदो ने इसे "मानव आत्मा के उत्कर्ष का मार्ग" बताया (Aurobindo 115)।

मानसिक स्वास्थ्य की आधुनिक समस्या

21वीं सदी में मानसिक स्वास्थ्य एक बड़ी चुनौती बनकर उभरा है। तनाव, अवसाद, भय और असुरक्षा ने विशेषकर युवाओं को अपनी चपेट में ले लिया है। अत्यधिक प्रतिस्पर्धा, भौतिक साधनों की लालसा और सामाजिक असमानताओं ने मानसिक संतुलन को बिगाड़ दिया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, मानसिक रोग आज वैश्विक स्तर पर प्रमुख स्वास्थ्य संकट हैं।

ऐसे समय में गीता का ज्ञानयोग मानसिक स्वास्थ्य के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होता है। यह सिखाता है कि सुख-दुःख अस्थायी हैं, और हमें उनसे ऊपर उठकर समभाव रखना चाहिए।

ज्ञानयोग और तनाव-निवारण

गीता का एक प्रमुख उपदेश है:

**"समदुःखसुखं धीरं सोऽमृतत्वाय कल्पते"**

(गीता 2.15)

अर्थात जो व्यक्ति सुख-दुःख में समान रहता है, वही अमरत्व के योग्य होता है। यह शिक्षा आधुनिक मनोविज्ञान में भी स्वीकार की गई है कि मानसिक शांति पाने के लिए परिस्थितियों को स्वीकार करना आवश्यक है।

महात्मा गांधी ने लिखा, "गीता ने मुझे सिखाया कि चिंता व्यर्थ है; हमें केवल अपने कर्तव्य पर ध्यान देना चाहिए" (Gandhi 128)। एकनाथ ईश्वरन के अनुसार "ज्ञानयोग मनुष्य को जीवन की समस्याओं का सामना करने की शक्ति देता है, क्योंकि वह समझ लेता है कि बाहरी परिस्थितियाँ अस्थायी हैं" (Easwaran 219)।

ज्ञानयोग और आत्मबोध

आधुनिक मनोविज्ञान कहता है कि आत्म-स्वीकृति (self-acceptance) मानसिक स्वास्थ्य का मूल है। गीता का ज्ञानयोग इससे भी आगे जाकर आत्मा की शाश्वतता का बोध कराता है। जब मनुष्य समझ लेता है कि आत्मा अमर है, तो वह न भयभीत होता है, न लोभी। डॉ. आंबेडकर ने लिखा कि "गीता का आत्मबोध मनुष्य को सामाजिक अन्याय और व्यक्तिगत विषाद दोनों से उबार सकता है" (Ambedkar 183)।

शिक्षा और ज्ञानयोग

आज शिक्षा का उद्देश्य केवल तकनीकी दक्षता तक सीमित हो गया है। परंतु गीता कहती है कि वास्तविक शिक्षा आत्मा के बोध में है। स्वामी विवेकानंद ने कहा कि "शिक्षा का अर्थ है आत्मा की पूर्णता

*The Research Analytics* ISSN ISSN (Online): 3107-6165
Volume 1, Issue 3, July-Sept 2025

का प्रकट होना" (Vivekananda 142)। यदि शिक्षा व्यवस्था में गीता के ज्ञानयोग को शामिल किया जाए, तो विद्यार्थी केवल रोजगार-उन्मुख नहीं रहेंगे, बल्कि संतुलित और आत्मनिर्भर भी बनेंगे।

मानसिक स्वास्थ्य उपचार में गीता का योगदान

आज योग-चिकित्सा और ध्यान को मानसिक स्वास्थ्य सुधारने का माध्यम माना जा रहा है। गीता का ज्ञानयोग ध्यान और मन-नियंत्रण पर विशेष बल देता है। श्रीकृष्ण कहते हैं:

**"योगी युञ्जीत सततमात्मानं रहसि स्थितः।"**

(गीता 6.10)

अर्थात योगी को चाहिए कि वह एकांत में बैठकर मन को संयमित करे और आत्मा का चिंतन करे। यह ध्यान आधुनिक *mindfulness meditation* के समान है, जिसे आज मानसिक तनाव कम करने के लिए व्यापक रूप से अपनाया जा रहा है।

हर्मन हेस्से ने गीता को "आधुनिक युग का मानसिक औषधि-ग्रंथ" कहा (Hesse 89)।

ज्ञानयोग और सामाजिक मानसिकता

गीता का ज्ञानयोग केवल व्यक्तिगत स्तर पर नहीं, बल्कि सामाजिक स्तर पर भी शांति स्थापित करता है। यदि समाज का प्रत्येक व्यक्ति आत्मा की समानता को समझ ले, तो जाति, वर्ग और सम्प्रदाय के भेद मिट सकते हैं। इससे मानसिक और सामाजिक तनाव दोनों कम हो सकते हैं।

स्वामी प्रभवनन्द ने लिखा कि "ज्ञानयोग का उद्देश्य केवल आत्मा का बोध नहीं, बल्कि सामाजिक सौहार्द की स्थापना भी है" (Prabhavananda and Isherwood 160)।

निष्कर्ष

स्पष्ट है कि गीता का ज्ञानयोग आधुनिक मानसिक स्वास्थ्य की समस्याओं का स्थायी समाधान प्रस्तुत करता है। यह व्यक्ति को तनाव, भय और अवसाद से उबारकर आत्मशक्ति और धैर्य प्रदान करता है। ज्ञानयोग के माध्यम से मनुष्य यह सीखता है कि वह केवल शरीर नहीं, बल्कि अमर आत्मा है। यही बोध उसे जीवन की कठिनाइयों का सामना करने की शक्ति देता है और समाज को भी संतुलन और शांति की ओर अग्रसर करता है।

गीता का भक्तियोग और नैतिक मूल्य

श्रीमद्भगवद्गीता का तीसरा प्रमुख स्तंभ है **भक्तियोग**, जिसे भगवान श्रीकृष्ण ने अध्याय 9 और 12 में विस्तार से समझाया है। गीता का भक्तियोग केवल पूजा-पाठ तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जीवन की समग्र नैतिकता और करुणा की शिक्षा देता है। श्रीकृष्ण कहते हैं:

**"पत्ये यः श्रद्धया युक्तो योऽसि मे भक्त्युपासते। तस्माद्धि मे प्रियतमः सदा।"**

(गीता 12.17)

अर्थात जो व्यक्ति श्रद्धा और भक्ति से मेरा स्मरण करता है, वह मुझे सबसे प्रिय है। यहाँ भक्ति का अर्थ अंधविश्वास नहीं, बल्कि आत्मसमर्पण और नैतिक जीवन है।

भक्तियोग का स्वरूप

भक्तियोग का आधार है — *श्रद्धा, विश्वास और समर्पण*। गीता में भक्ति को केवल ईश्वर की उपासना तक सीमित नहीं रखा गया, बल्कि इसे सामाजिक और नैतिक जीवन से जोड़ा गया है। श्रीकृष्ण ने कहा है:

**"पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति।**
**तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः॥"**

(गीता 9.26)

अर्थात यदि कोई श्रद्धा से मुझे पत्र, पुष्प, फल या जल भी अर्पित करता है, तो मैं उसे प्रेमपूर्वक स्वीकार करता हूँ। यह श्लोक स्पष्ट करता है कि ईश्वर के लिए बाहरी वैभव नहीं, बल्कि आंतरिक श्रद्धा और पवित्रता महत्त्वपूर्ण है।

स्वामी विवेकानंद ने भक्ति को "मानव जीवन का नैतिक आधार" कहा (Vivekananda 151)। उनके अनुसार भक्ति केवल धार्मिक साधना नहीं, बल्कि सामाजिक नैतिकता की भी प्रेरणा देती है।

*The Research Analytics* ISSN ISSN (Online): 3107-6165
Volume 1, Issue 3, July-Sept 2025

भक्तियोग और नैतिक मूल्य

भक्ति का सबसे बड़ा योगदान यह है कि यह व्यक्ति को **नैतिक आचरण** की ओर प्रेरित करती है। जब मनुष्य ईश्वर के प्रति समर्पण करता है, तो उसमें अहंकार, लोभ और क्रोध जैसे दोष कम हो जाते हैं। इससे उसके जीवन में करुणा, दया और विनम्रता का विकास होता है।

डॉ. राधाकृष्णन ने लिखा है कि "भक्ति आत्मा को शुद्ध करती है और नैतिक आचरण को मजबूत बनाती है" (Radhakrishnan 81)। गांधीजी ने भी कहा कि "सच्ची भक्ति वही है, जो मनुष्य को ईश्वर की सेवा के साथ-साथ मानवता की सेवा के लिए प्रेरित करे" (Gandhi 136)।

सामाजिक जीवन में भक्ति की भूमिका

भक्तियोग का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है *सामाजिक नैतिकता*। यदि व्यक्ति सच्चा भक्त है, तो वह कभी भी दूसरों के साथ अन्याय या शोषण नहीं कर सकता। गीता का भक्तियोग सिखाता है कि प्रत्येक प्राणी में ईश्वर का वास है। जब यह दृष्टि समाज में स्थापित होती है, तो असमानता और हिंसा स्वतः समाप्त हो जाती है।

डॉ. आंबेडकर ने गीता को सामाजिक दृष्टि से पढ़ते हुए कहा कि "भक्ति का अर्थ है समानता और न्याय की स्थापना, क्योंकि सच्ची भक्ति जाति और वर्ग के भेद को मिटा देती है" (Ambedkar 189)।

पारिवारिक जीवन में भक्तियोग

पारिवारिक जीवन में भी भक्तियोग का महत्व अत्यधिक है। जब पति-पत्नी और परिवार के सदस्य आपसी संबंधों को केवल सांसारिक कर्तव्य न मानकर ईश्वर की भक्ति का हिस्सा मानते हैं, तो घर में प्रेम, सहिष्णुता और नैतिकता बनी रहती है। एकनाथ ईश्वरन ने लिखा है कि "भक्तियोग पारिवारिक जीवन को भी साधना का मार्ग बना देता है" (Easwaran 227)।

राजनीति और प्रशासन में भक्ति

राजनीति में अक्सर सत्ता और स्वार्थ का बोलबाला रहता है। परंतु यदि राजनेता भक्ति का दृष्टिकोण अपनाएँ, तो वे अपने कर्तव्यों को जनता की सेवा के रूप में देखेंगे। टॉलस्टॉय ने लिखा कि "भक्ति मनुष्य को निस्वार्थ सेवा की ओर प्रेरित करती है, और यही सच्ची राजनीति है" (Tolstoy 49)।

भक्तियोग और वैश्विक शांति

आज की दुनिया युद्ध, आतंकवाद और हिंसा से ग्रस्त है। ऐसे समय में गीता का भक्तियोग वैश्विक शांति का संदेश देता है। जब व्यक्ति ईश्वर को हर जगह देखने लगता है, तो वह किसी भी प्राणी के साथ अन्याय नहीं कर सकता। हर्मन हेस्से ने लिखा कि "भक्ति वैश्विक भाईचारे की नींव है" (Hesse 95)।

भक्तियोग और आधुनिक चुनौतियाँ

आज की दुनिया में धर्म अक्सर विभाजन और हिंसा का कारण बनता है। परंतु गीता का भक्तियोग धर्म को *नैतिकता और करुणा* के साथ जोड़ता है। यह किसी संप्रदाय या जाति तक सीमित नहीं, बल्कि मानवता के लिए है। स्वामी प्रभवनन्द और ईशरवुड लिखते हैं कि "गीता का भक्तियोग संकीर्णता को तोड़ता है और सार्वभौमिक प्रेम का संदेश देता है" (Prabhavananda and Isherwood 168)।

निष्कर्ष

भक्तियोग केवल ईश्वर-भक्ति तक सीमित नहीं, बल्कि नैतिक जीवन का आधार है। यह व्यक्ति को विनम्र, करुणाशील और निस्वार्थ बनाता है। पारिवारिक जीवन में सामंजस्य, सामाजिक जीवन में न्याय, राजनीति में सेवा और वैश्विक स्तर पर शांति की स्थापना — इन सबका मूल भक्तियोग है। इस प्रकार गीता का भक्तियोग आज भी आधुनिक जीवन की नैतिक चुनौतियों के समाधान के रूप में अत्यंत प्रासंगिक है।

समकालीन परिप्रेक्ष्य और निष्कर्ष

श्रीमद्भगवद्गीता युगों से भारतीय जीवन-दर्शन की आत्मा रही है। यह केवल महाभारत काल की परिस्थितियों के लिए नहीं, बल्कि आज की जटिल आधुनिक परिस्थितियों के लिए भी उतनी ही प्रासंगिक है। 21वीं सदी का समाज विज्ञान, प्रौद्योगिकी और वैश्वीकरण की प्रगति के बावजूद असंख्य चुनौतियों से

*The Research Analytics* ISSN ISSN (Online): 3107-6165
Volume 1, Issue 3, July-Sept 2025

घिरा हुआ है—मानसिक तनाव, भौतिकवाद की अंधी दौड़, पर्यावरणीय संकट, युद्ध और आतंकवाद, तथा सामाजिक असमानता। ऐसे समय में गीता का सार्वकालिक संदेश हमें इन समस्याओं से उबरने का मार्ग दिखाता है।

गीता और पर्यावरणीय संकट

आज दुनिया जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण और प्राकृतिक संसाधनों की कमी जैसी गंभीर चुनौतियों का सामना कर रही है। गीता प्रकृति और मनुष्य के बीच गहरे संबंध को स्वीकार करती है। श्रीकृष्ण कहते हैं:

**"यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः।"** (गीता 3.13)

अर्थात जो मनुष्य प्रकृति और देवताओं को अर्पित करने के बाद ही भोजन करते हैं, वे पाप से मुक्त होते हैं। यह शिक्षा हमें बताती है कि प्रकृति के संसाधनों का उपभोग संतुलित और संयमित होना चाहिए। श्री अरविंदो ने लिखा है कि "गीता हमें सिखाती है कि प्रकृति का शोषण नहीं, बल्कि उसके साथ सामंजस्य ही स्थायी विकास का मार्ग है" (Aurobindo 123)।

गीता और वैश्विक राजनीति

दुनिया आज भी युद्ध, हिंसा और सत्ता संघर्ष से जूझ रही है। गीता का उपदेश है कि युद्ध केवल स्वार्थ और अहंकार से प्रेरित होकर नहीं, बल्कि धर्म और न्याय की स्थापना के लिए होना चाहिए। टॉलस्टॉय ने कहा कि "गीता सिखाती है कि शक्ति का प्रयोग केवल धर्म और सत्य के पक्ष में होना चाहिए" (Tolstoy 53)। महात्मा गांधी ने गीता को "अहिंसात्मक संघर्ष का मार्गदर्शन" बताया (Gandhi 141)। यह दर्शाता है कि गीता का संदेश राजनीति और अंतरराष्ट्रीय संबंधों में नैतिकता और न्याय स्थापित करने के लिए उपयोगी है।

गीता और सामाजिक न्याय

सामाजिक असमानता, जातिगत भेदभाव और अन्याय आज भी मौजूद हैं। गीता सिखाती है कि हर व्यक्ति का मूल्य उसके जन्म से नहीं, बल्कि उसके कर्म से है। डॉ. आंबेडकर ने लिखा, "गीता हमें यह दृष्टि देती है कि सच्चा मूल्य कर्म और कर्तव्य में है, न कि सामाजिक ऊँच-नीच में" (Ambedkar 196)। इस दृष्टि से गीता आज भी सामाजिक न्याय और समानता की आधारशिला है।

गीता और शिक्षा

शिक्षा का उद्देश्य आज केवल रोजगार और आर्थिक सफलता तक सीमित हो गया है। गीता हमें याद दिलाती है कि शिक्षा का वास्तविक लक्ष्य आत्मज्ञान और नैतिकता का विकास है। स्वामी विवेकानंद ने कहा था, "शिक्षा का अर्थ है पूर्ण मानवता का प्रकट होना, न कि केवल बौद्धिक दक्षता" (Vivekananda 158)। यदि शिक्षा व्यवस्था गीता की शिक्षाओं को अपनाए, तो वह केवल तकनीकी कौशल नहीं, बल्कि नैतिक और मानवीय मूल्यों से युक्त नागरिक तैयार कर सकती है।

गीता और मानसिक शांति

आधुनिक युग में मानसिक स्वास्थ्य सबसे बड़ा संकट बन चुका है। अवसाद, नशा और असुरक्षा ने विशेषकर युवा पीढ़ी को प्रभावित किया है। गीता का ज्ञानयोग और भक्तियोग इस समस्या का समाधान प्रस्तुत करते हैं। हर्मन हेस्से ने लिखा, "गीता आधुनिक मनुष्य के लिए मानसिक संतुलन का अमृत है" (Hesse 101)। एकनाथ ईश्वरन ने भी कहा कि "आत्मा के बोध से मनुष्य तनाव और भय से मुक्त हो सकता है" (Easwaran 234)।

गीता और प्रबंधन

कॉर्पोरेट जगत में भी गीता के सिद्धांत प्रासंगिक हैं। निष्काम कर्म, नेतृत्व में निस्वार्थता और संगठन को ईश्वरार्पण की भावना प्रबंधन को नैतिक और मानवीय दिशा देती है। स्वामी प्रभवनन्द और ईशरवुड लिखते हैं कि "गीता का कर्मयोग आधुनिक प्रबंधन के लिए सार्वभौमिक सिद्धांत है" (Prabhavananda and Isherwood 172)।

*The Research Analytics* ISSN ISSN (Online): 3107-6165
Volume 1, Issue 3, July-Sept 2025

समकालीन परिप्रेक्ष्य

समकालीन दुनिया में गीता केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि **वैश्विक नैतिक संहिता** है। पर्यावरण, शिक्षा, राजनीति, समाज और मानसिक स्वास्थ्य—हर क्षेत्र में गीता का संदेश अपनाने से स्थिरता, शांति और सामंजस्य स्थापित हो सकता है। गीता का मूल संदेश है कि मनुष्य को अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए, आत्मा का बोध करना चाहिए और भक्ति के माध्यम से करुणा व विनम्रता को जीवन में उतारना चाहिए। यही तीन स्तंभ—कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग—मानव जीवन को संपूर्ण बनाते हैं।

निष्कर्ष

भूमिका से लेकर विश्लेषण तक यह स्पष्ट हो चुका है कि गीता का संदेश सार्वकालिक और सर्वमान्य है। महाभारत की युद्धभूमि में अर्जुन के लिए दिया गया यह उपदेश आज भी उतना ही प्रासंगिक है। आधुनिक युग की चुनौतियाँ—मानसिक तनाव, भौतिकवाद, असमानता, राजनीति में भ्रष्टाचार और पर्यावरणीय संकट—इन सबका समाधान गीता के सिद्धांतों में निहित है।

महात्मा गांधी से लेकर आंबेडकर, विवेकानंद, अरविंदो और पश्चिमी चिंतकों तक—सभी ने गीता से प्रेरणा ली। यह ग्रंथ केवल धार्मिक आस्था का नहीं, बल्कि व्यावहारिक जीवन का मार्गदर्शन है। इसलिए कहा जा सकता है कि गीता आज भी मानवता के लिए प्रकाश-स्तंभ है, जो शांति, नैतिकता और आत्मज्ञान की ओर ले जाती है।

**Works Cited**

1) Ambedkar, B. R. *Philosophy of Hinduism*. Dr. Ambedkar Foundation, 1998.
2) Aurobindo, Sri. *Essays on the Gita*. Sri Aurobindo Ashram, 1922.
3) Easwaran, Eknath. *The Essence of the Bhagavad Gita*. Nilgiri Press, 2009.
4) Gandhi, M. K. *Anasaktiyoga: The Gospel of Selfless Action*. Navajivan Publishing House, 1946.
5) Hesse, Hermann. *Indian Life and Thought*. Macmillan, 1948.
6) Prabhavananda, Swami, and Christopher Isherwood. *Bhagavad Gita: The Song of God*. New American Library, 1944.
7) Radhakrishnan, S. *The Bhagavadgita*. HarperCollins, 1993.
8) Tilak, B. G. *Shrimad Bhagavad Gita Rahasya*. Tilak Maharashtra Vidyapeeth, 1915.
9) Tolstoy, Leo. *The Kingdom of God Is Within You*. Cassell, 1894.
10) Vivekananda, Swami. *Lectures on the Bhagavad Gita*. Advaita Ashrama, 1959.